Philosophy - Paper III

Ethics

Q-1 Distinguish between Moral and non-moral actions? What actions are non-moral?

Ans:- जैसा कि सभी जानते हैं, भारत में दर्शन जीवन के लिए है। प्रत्येक दार्शनिक विश्व को एक नैतिक रंगमंच मानता है। जिस तरह अभिनेता (दिवा) तरह तरह के कपड़े पहनकर, अलग अलग अपना अभिनय दिखाकर लौट जाते हैं, उसी तरह मन (mind) और इन्द्रिय (Sense) से सजकर मानव इस संसार में आता है और अपने कर्मों का प्रदर्शन करता है। प्रत्येक व्यक्ति को नैतिक व्यवस्था में आकर इस संसार के रंगमंच पर एक कामयाब हीरो बनने की कोशिश करनी चाहिए।

नैतिक और नीतिशून्य कर्म को समझने से पहले जरूरी है कि हम जानें नैतिकता क्या है। नीतिशास्त्र जिसे Ethics कहा जाता है यह ग्रीक शब्द Ethica से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ होता है रीति या आदत। रीति रिवाज, प्रचलन या आदत मनुष्य के वैसे कर्म हैं, जिनकी उन्हें आदत हो जाती है। मनुष्य के दैहिक क्रियाओं को भी आदत कहा जाता है, जिन्हें मनुष्य अपनी इच्छा से किया है।

नीतिशास्त्र वह शास्त्र है जो व्यक्ति के समाज में रहते हुए उनके व्यवहार का अध्ययन करता है। क्योंकि नैतिकता का सीधा सम्बंध "चाहिए" से जुड़ा है। हमें ये करना चाहिए, वैसे कर्म छोड़ देना चाहिए ये सब प्रश्न यहीं से उठते हैं। जैसा की आप जानते हैं मनुष्य का चरित्र उसके आदतों

से व्यवहार से पता चलता है। इंसान के आचार व्यवहार उसके चरित्र के दर्पण है। आज के वैज्ञानिक युग में हमें Phy, Chem, Medicine, Computer की जरूरत है उससे बढ़कर हमें यह जानने की जरूरत है कि मनुष्य को कैसा रहना चाहिए? विज्ञान का कैसे उपयोग किया जाय यह तभी जाना जा सकता जब इसका खोज हो जाय कि मनुष्य के जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए।

Moral Actions (नैतिक कर्म) - वैसे कर्म जिसे हम उचित और अनुचित के श्रेणी में रख सकें। जिस काम का करने में मनुष्य की इच्छा और संकल्प - यानी जानबूझ कर किया गया कर्म, यूं कर्म करने वक्त मनुष्य की चेतना उसमें शामिल हो, अतः सभी संकल्पित कर्म नैतिक कर्म है। जिसमें कोई आत्मचेतन प्राणी स्वतंत्र इच्छा से चुनाव के बाद बुद्धिमानी से करें। बहुत से ऐसे कर्म भी है जिसे मनुष्य अपने आदतन अनुसार करता है उसे भी नैतिक निर्णय के श्रेणी में रखा जाता है। क्योंकि आदत से पहले उस कर्म को करने की इच्छा बनी रहती उसके संकल्प भी रहते है। इसलिए Habitual actions का भी नैतिक निर्णय होसकता है। परन्तु जिस क्रिया में संकल्प का अभाव हो वह नैतिक कर्म नहीं है।

Non-moral actions - ऐसे कर्म जिसमें नैतिक गुणों का अभाव है, जिसे हम न पाप न पुण्य, धर्म और न अधर्म, न उचित और न अनुचित कहें, ऐसे कर्म नीति शून्य कर्म है। इसमें इच्छा और संकल्प

का अभाव रहता है। जैसे हम निर्जीव पदार्थ (Non Living thing) के क्रियाओं पर नैतिक निर्णय नहीं दे सकते। अधिक बारिश से बाढ़ का आना, जाड़े में सूर्य को कम गर्मी देना या गर्मी में सूरज का तपना, यह सब नैतिक गुण के अभाव में हैं, इनपर कोई निर्णय नहीं दिया जाता।

पेड़पौधों, पशुओं के कर्म भी नीतिशून्य हैं। क्योंकि उनमें भी इच्छा का अभाव है। वैसे ही मनुष्य का सांस लेना, पलक गिराना नीतिशून्य कर्म है। इनमें मनुष्य की इच्छा शामिल नहीं है।

मनुष्य के वैसे क्रिया जो मानसिक विकार (पागल, बच्चा) के कार्य को भी उचित या अनुचित नहीं कह सकते। अगर कोई पागल किसी की हत्या कर दे तो उसे कोई सजा नहीं मिलते, वैसे बच्चों के द्वारा किये गए कर्म भी नैतिककर्म से बाहर है। बहुत सारे कर्म जो बलपूर्वक कराये जायें, जिसमें प्रतिरोध की शक्ति मनुष्य में नहीं हो, उसपर भी नैतिक निर्णय नहीं दिया जाता। सम्मोहन द्वारा कराया गया कर्म भी नीतिशून्य कर्म है।

20.4.2020

Fauzia Perween
H.O.D (Philosophy)
O.C.P.C